Original Research Paper Hindi

Balchanma : Ek Jujharu Nayak

डॉ.उत्तम पटेल | अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्टस एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला.वलसाड-369050 (गुजरात)

ABSTRACT

हिंदी के आंचलिक उपन्यासकारों में नागार्जुन का महत्वपूर्ण स्थान है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में समाजवादी जन-चेतना को अलग-अलग पात्रों द्वारा अभिव्यक्त किया है। इनका बलचनमा इस दृष्टि से महत्वपूर्ण उपन्यास है जिसमें एक किसान के शोषण और संघर्ष की कथा प्रस्तुत की गई है। 'बलचनमा' उपन्यास में पहली बार नागार्जुन ने स्वातंत्र्योत्तर भारत में बँधवा मजदूर, खेतिहर मजदूर और किसानों के तीखे संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। इस उपन्यास का बलचनमा एक जुझारू नायक है। जमींदारों के शोषण को देख बलचनमा का किसान भी करवट बदलने लगता है। वह किसानों को संगठित करता है और जमींदार खानबहादुर सादुल्ला खाँ के खिलाफ संघर्ष शुरू करता है। वह किसानों में चेतना जगाता है। 'गोदान' में होरी के चरित्र में प्रेमचंद जी ने जो करुण विवशता दिखाई है, वह बलचनमा में नहीं है।

KEYWORDS किसान, संघर्ष, जन-चेतना, होरी,

Manuscript-

प्रस्तावना - वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। इन्होंने मैथिली में यात्री नाम से साहित्य सर्जन किया। ' 'रतिनाथ की चाची' और 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दुखमोचन', 'वरुण के बेटे' आदि इनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। ये जन-लेखक हैं। इनके उपन्यास समाजवादी- विचारधाराओं से युक्त हैं। यही कारण है कि इनका 'बलचनमा' उपन्यास का नायक जन-चेतना से युक्त है। जो किसानों को जमींदारों के सामने संगठित कर उनके सामने संघर्ष करता है। उस संघर्ष में जमींदारों के आदमियों की पिटाई से मरणासन्न स्थिति में भी वह सोचता है कि आजादी आसमान से उतरकर नहीं आएगी, वह परगट होगी नीचे-जुती धरती के भुरभुरे ढेलों को फोड़कर।

नागार्जुन का 'बलचनमा' उपन्यास 'किसान जीवन के यातनापूर्ण प्रसंगों का मार्मिक एलबम है।'[1] डॉ. सुषमा धवन का कथन है कि 'यह एक साधनहीन, परिश्रमी और ईमानदार किसान के जीवन की गाथा है।' [2] किसी ने 'बलचनमा' को प्रेमचंद जी के ''गोदान' की अगली कड़ी'[3] माना है। जब कि डॉ. रामदरश मिश्र ने लिखा है- 'पूरे उपन्यास में किसान का दुःख-दर्द और संघर्ष व्याप्त है तथा मानवीय अधिकारों को जकड़नेवाली शोषक, जर्जर मान्यताओं, वर्ग-व्यवस्थाओं पर कलात्मक प्रहार किया गया है।' [4]

'बलचनमा' बिहार के ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यास है। इसका नायक है- बलचनमा। डॉ.बेचन जी ने ठीक ही लिखा है कि 'नागार्जुन ने बलचनमा के रूप में भारतीय जीवन के एक ऐसे पात्र को लिया है, जो कभी भारतीय साहित्य का विषय नहीं बना था।'[5]

प्रेमचंद जी ने अपने 'गोदान' में जिस निरीह कृषक होरी के शोषण का चित्रण किया है, उसीके विकास के रूप में नागार्जुन ने बलचनमा को प्रस्तुत किया है। 'होरी भी किसान है और बलचनमा भी। होरी ग्रामीण संस्कृति के ध्वंस की सूचना देता है और बलचनमा इसके भावी निर्माण की।[6] 'गोदान' का होरी समस्याओं और यातनाओं से जूझते हुए जहाँ समाप्त होता है, बलचनमा उन्हीं परिस्थितियों से अपनी जीवन-यात्रा आरंभ करता है। बलचनमा होरी की समाधि का बिरवा है।' [7]

'बलचनमा' उपन्यास में पहली बार नागार्जुन ने स्वातंत्र्योत्तर भारत में बँधवा मजदूर, खेतिहर मजदूर और किसानों के तीखे संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर वर्ग-संघर्ष का व्यापक चित्रण भी इसमें है। जमींदारों द्वारा भूमिहीन किसानों से बेगार लेना, काम नहीं करने पर उनकी पिटाई करना, किसान-मजदूर की बहू-बेटियों को बलात् भोगना आदि जमींदारों के अत्याचारों की ओर उपन्यासकार ने संकेत किया है।

बलचनमा देहात के भूमिजीवी श्रमिक का लड़का है। छोटी उम्र में ही वह पितृहीन होकर दास बनकर जीवन व्यतीत करने को विवश हो जाता है। विलासी एवम् अनैतिक जीवन व्यतीत करनेवाले जमींदारों का वह शिकार बनकर अपने को अत्यंत हीन परिस्थिति में पाता है। चौदह वर्ष की उम्र में वह छोटी मलिकाइन के यहाँ भैंस का चरवाहा बन जाता है। जमींदारों के यहाँ के जूठन से उसे अपना पेट भरना पड़ता है। उसके बाप को मात्र दो किशनभोग आम तोड़ने के कारण मालिक के हाथों मर जाना पड़ा था। मलिकाइन अनाज तौलकर वापस लेते वक्त बटखरा बदल देती थी, जिससे उसे अधिक अनाज मिलता और बाकी बचा हुआ अनाज भी वह ले लेती थी। मंझला मालिक कलम बाग बनाने

के लिए बलचनमा की जमीन भी ले लेता है। यही नहीं वह बलचनमा की बहन की इज्जत लूटने का भी प्रयत्न करता है, किन्तु उसमें असफल होता है। तब वह बलचनमा को पकड़वाने के लिए झुठे आरोप लगाता है। बलचनमा को जमींदार वर्ग के प्रति बहुत घृणा है, जो उसके इन शब्दों में व्यक्त होती है- 'बेशक मैं गरीब हूँ, तेरे पास अपार संपदा है, कुल है, खानदान है, बाप-दादे का नाम है और मेरे पास कुछ नहीं है। मगर आखरी दम तक तेरे खिलाफ डटा रहूँगा। अपनी ताकत को तेरे विरोध में लदा दूँगा। माँ और बहन को जहर दे दूँगा, लेकिन उन्हें तू अपनी रखेली बनाने का सपना कभी पूरा न कर सकेगा।' [8]

फूलबाबू के कारण बलचनमा शहरी जीवन एवम् संस्कृति का निकट से परिचय प्राप्त करता है। छोटे मालिक द्वारा अपनी बहन रेबनी के साथ दुर्व्यवहार करने की शिकायत पर फूलबाबू जो जवाब देते हैं, उससे वह आश्चयचकित रह जाता है।

कॉंग्रेसी आश्रम में फूलबाबू और राधाबाबू आदि नेताओं के साथ रहते हुए वह उनके असली चेहरों को नज़दीक से देखता-परखता है और पाता है कि ये नेता उसी उच्च वर्ग से आते हैं, जो अब तक निम्नवर्ग का शोषण करते आये हैं। उसका मोहभंग तभी होता है जब भूकंप से संकट-ग्रस्त किसानों को सरकार द्वारा दी गई सहायता-राशि कॉंग्रेसी नेता अपने सगे-संबंधियों को बाँट देते हैं। विधवा कुंती ठीक ही कहती है- 'बबुआ बालो, भुइकंफ यह क्या हुआ, बड़े लोगों के लिए आमदनी का एगो अउर रास्ता निकल आय़ा...।' [9] बीस आदमियों के नाम सवा पाँचसौ रूपये की खैरात लिखी जाती है, लेकिन लोगों को मिलते हैं शिर्फ दो सौ छः रुपये।

खेतों पर संघर्ष होता है। जमींदार किसानों को भूमि से वंचित करने के लिए बेदखली दायर कर देते हैं। सोशलिस्ट नेता किसानों को उनका हक दिलाने के लिए जेहाद छेड़ते हैं। बलचनमा का किसान भी करवट बदलने लगता है। वह किसानों को संगठित करता है और जमींदार खानबहादुर सादुल्ला खाँ के खिलाफ संघर्ष शुरू करता है। वह किसानों में चेतना जगाता है। वे नारे लगाते हैं- 'कमानेवाला खायेगा... इसके चलके जो कुछ हो। इन्किलाब... जिंदाबाद। जमीन किसकी... जोते-बोये उसकी। अंग्रेजी राज... नाश हो। जमींदारी पर्था... नाश हो। किसान सभा... जिंदाबाद। लाल झंडा... जिंदाबाद। इन्किलाब... जिंदाबाद।' [10] गाँव के सभी लोग किसान-सभा के मेम्बर हो जाते हैं। अगहनी फसल की छीना-झपटी होती है। एक किसान का खून होता है। जमींदार उल्टे किसानों पर मुकदमा चलाते हैं। खेत में खड़ी फसल के अधिकार को लेकर किसान-जमींदार के बीच संघर्ष होता है। किसानों की शक्ति और संघर्ष के सामने पुलिस भी कुछ नहीं कर पाती। छोटी मालकिन बलचनमा के घर को जला देने की धमकी देती है तब वह अपनी माँ से स्पष्ट कहता है- 'उनके बाप का घर है? आ बैठ... तू गई थी क्या करने?... किसी का घर फूँक देना क्या इतना आसान है? मेरा ही क्या जमींदार का बस चले तो वह सबके घर फूँक दे।' [11]

वह स्वयं अपने घर की रक्षा के लिए पहरा देता है, जहाँ पर जमींदार के आदमी उसे मार-मारकर मरणासन्न कर देते हैं। तब भी वह सोचता है-'किसान की आजादी आसमान से उतरकर नहीं आएगी, वह परगट होगी नीचे-जुती धरती के भुरभुरे ढेलों को फोड़कर...।' [12]

इस प्रकार 'गोदान' में होरी के चरित्र में प्रेमचंद जी ने जो करुण विवशता दिखाई है, वह बलचनमा में नहीं है। होरी समझौता करता है, झुकता है और अंत में टूट जाता है जब कि बलचनमा इसके विपरीत टूट तो जाता है, मगर झुकता नहीं है। इस संदर्भ में डॉ.रणजीत मौर्य ने उचित ही लिखा है- 'होरी जहाँ उच्च अवस्था से निम्न अवस्था की ओर क्रमसः चलता है, वहीं बलचनमा निम्न अवस्था से बेहतर अवस्था की ओर उत्तरोत्तर बढ़ता है। होरी अपने जीते जी एक गाय नहीं रख सका, जो भारतीय किसान की मूलभूत संपत्ति है, लेकिन बलचनमा अपने परिश्रम से एक बैल रखने में अवश्य सफल हो जाता है। बलचनमा अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए जी तोड़ मेहनत करता है तो अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जान की बाजी तक लगा देता है।' [13] बलचनमा, होरी के समान मर नहीं जाता, बेहोश होकर जमीन पर लुढक जाता है।

इस प्रकार नागार्जुन ने यह संकेत किया है कि बलचनमा जो बेहोश होकर लुढक गया है, होश में आयेगा। वह फिर से उठेगा। फिर से जूझेगा और अपने अधिकारों को लेकर ही रहेगा। इस दृष्टि से बलचनमा का पात्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। वह होरी की अपूर्ण मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए संघर्ष करता है। बलचनमा होरी की जीवनगाथा का एक अद्‌भुत विकासशील चरित्र है। यही कारण है कि बलचनमा किसान की विद्रोही भावनाओं का प्रतीक प्रतीत होता है।[14] वह प्रेमचंद के होरी की आत्मा का विकसनशील रूप है। इस रूप में बलचनमा एक जुझारू नायक है। लेखक की समाजवादी विचारधारा के कारण ही बलचनमा एक विद्रोही किसान के रूप में उभरता है। य़ही कारण है कि डॉ. इंद्रनाथ मदान इसे समाजवादी उपन्यास मानते हैं।[15] नागार्जुन का यह उपन्यास किसान की जिजीविषा को, अन्याय के सामने उसके संघर्ष को, पराजय के आगे उसकी विजय को और मृत्यु के आगे उसके जीवन की आशा को व्यक्त करता है।

'बलचनमा' नागार्जुन का आत्मकथनात्मक शैली में लिखा गया उपन्यास है। डॉ.इंद्रनाथ मदान इसे समाजवादी उपन्यास मानते हैं। [16] नागार्जुन की यह रचना वर्णनात्मक शिल्प-विधि की रचना है। इसमें बिहार प्रांत के दरभंगा जिले के शोषक जमींदारों का वर्णन, बलचनमा द्वारा वर्णित किया गया है। बलचनमा ही उपन्यास का नायक है, जो दरभंगा के एक निम्न श्रेणी देहाती का पुत्र है। वही अपने जीवन की घटनाओं द्वारा शोषक वर्ग के अत्याचारों का विवरण उत्तम पुरूष में, अत्यंत सरल, सीधी विधि से, किसी भी प्रकार की कोई भूमिका बाँधे बिना प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास की छोटी-छोटी कहानियाँ बलचनमा के चरित्र को उद्घाटित करने के लिए संयोजित की गई हैं। जमींदारों के शोषण का वर्णन विस्तार से किया गया है, जिसकी तुलना 'गोदान' से की जाती है। यही कारण है कि कुछ आलोचकों ने 'बलचनमा' के शिल्प पर 'गोदान' का प्रभाव बताया है। [17]

निष्कर्ष (CONCLUSIONS)- इस प्रकार प्रेमचंद के बाद किसान-मजदूर-वर्ग के जीवन तथा ग्राम्य-परिवेश के चित्रण के अभाव की पूर्ति नागार्जुन ने अपने 'बलचनमा' द्वारा की है। गोदान का होरी जमींदारों से संघर्ष करते करते प्राण त्याग देता है जब कि नागार्जुन का बलचनमा जो बेहोश होकर लुढक गया है, होश में आयेगा। वह फिर से उठेगा। फिर से जूझेगा और अपने अधिकारों को लेकर ही रहेगा। इस रूप में ये होरी का विकसित रूप है।

संदर्भ-संकेत-

[1] कुमार, प्रेम (1976), स्वतंत्रता परवर्ती हिंदी उपन्यास, पृ.31, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
[2] धवन, सुषमा, (1961), हिंदी उपन्यास, पृ.304, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
[3] मौर्य, रणजीत (मार्च-1986), आजकल, पृ.35, दिल्ली
[4] मिश्र, रामदरश (1982), हिंदी उपन्यासः एक अंतर्यात्रा, पृ.231, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
[5] त्यागी, संपा. (1984), नागार्जुन, पृ.182, सहारनपुर, आशिर प्रकाशन
[6] मदान, इंद्रनाथ (1966), आज का हिंदी उपन्यास, पृ.46, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
[7] मौर्य, रणजीत (मार्च-1986), आजकल, पृ.35, दिल्ली
[8] नागार्जुन (1956), बलचनमा, पृ.64, इलाहाबाद, किताब महल
[9] वही. पृ.122
[10] वही. पृ.134
[11] वही. पृ.147
[12] वही. पृ.151-152
[13] मौर्य, रणजीत (मार्च-1986), आजकल, पृ.86, दिल्ली
[14] सिंह, रामगोपाल (1965), आधुनिक हिंदी साहित्य, पृ.220, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
[15] मदान, इन्द्रनाथ (1963) आधुनिकता और हिंदी उपन्यास, पृ.37, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
[16] वही.
[17] गुप्त, ज्ञानचंद (1975) आँचलिक उपन्यासः संवेदना और शिल्प, पृ.12, दिल्ली, अभिनव प्रकाशन